

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

( प्रथम खण्ड )

[ आदिपर्व और सभापर्व ]

( सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित )



अनुवादक—



पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

# महाभारतके सब पर्वोंके प्रत्येक अध्यायकी पूरी विषयसूची आदिपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
( अनुक्रमणिकापर्व )					
१-	ग्रन्थका उपक्रम; ग्रन्थमें कहे हुए अधिकांश विषयोंकी संक्षिप्त सूची तथा इसके पाठकी महिमा	१	१४-	जरत्कारुद्वारा वामुनिकी बहिनका पाणिग्रहण ...	७७
( पर्वसंग्रहपर्व )					
२-	समन्तपञ्चक क्षेत्रका वर्णन; अश्विहिणी सेनाका प्रमाण; महाभारतमें वर्णित पर्वों और उनके संक्षिप्त विषयोंका संग्रह तथा महाभारतके श्रवण एवं पठनका फल ...	२३	१५-	आस्तीकका जन्म तथा मातृश्रापसे सर्पसत्रमें नष्ट होनेवाले नागवंशकी उनके द्वारा रक्षा ...	७८
( पौष्यपर्व )					
३-	जन्मेजयको शरमाका शाप; जन्मेजयद्वारा सोमभवाका पुरोहितके पदपर वरण; आरुणि; उपमन्यु; वेद और उत्तङ्ककी गुह्यभक्ति तथा उत्तङ्कका सर्पयज्ञके लिये जन्मेजयको प्रोत्साहन देना ...	४६	१६-	कद्रू और विनताको कश्यपजीके वरदानसे अभीष्ट पुत्रोंकी प्राप्ति ...	७९
( पौलोमपर्व )					
४-	कथा-प्रवेश ...	६२	१७-	मेघ पर्वतपर अमृतके लिये विचार करनेवाले देवताओंकी भगवान् नारायणका समुद्र-मन्थनके लिये आदेश ...	८०
५-	भृगुके आश्रमपर पुलोमा दानवका आगमन और उसकी अग्निदेवके साथ बातचीत ...	६३	१८-	देवताओं और दैत्योंद्वारा अमृतके लिये समुद्रका मन्थन; अनेक रत्नोंके साथ अमृतकी उत्पत्ति और भगवान् का मोहिनीरूप धारण करके दैत्यों के हाथसे अमृत ले लेना ...	८२
६-	महर्षि च्यवनका जन्म; उनके तेजसे पुलोमा राक्षसका भस्म होना तथा भृगुका अग्निदेवको शाप देना ...	६५	१९-	देवताओंका अमृतपान; देवासुर-संग्राम तथा देवताओंकी विजय ...	८५
७-	शापसे कुपित हुए अग्निदेवका अहस्य होना और ब्रह्माजीका उनके शापको संकुचित करके उन्हें प्रसन्न करना ...	६६	२०-	कद्रू और विनताकी होड़; कद्रूद्वारा अपने पुत्रोंको शाप एवं ब्रह्माजीद्वारा उसका अनुमोदन ...	८७
८-	प्रमद्वाराका जन्म; रुद्रके साथ उसका वाक्यदान तथा विवाहके पहले ही सौंपके काटनेसे प्रमद्वाराकी मृत्यु ...	६९	२१-	समुद्रका विस्तारसे वर्णन ...	८८
९-	रुद्रकी आधी आयुसे प्रमद्वाराका जीवित होना; रुद्रके साथ उसका विवाह; रुद्रका सर्पोंको मारनेका निश्चय तथा रुद्र-कुण्डुभ-संवाद ...	७०	२२-	नागोंद्वारा उन्मै-श्रवाकी पूँछको काली बनाना; कद्रू और विनताका समुद्रको देखते हुए आगे बढ़ना ...	९०
१०-	रुद्र मुनि और कुण्डुभका संवाद ...	७२	२३-	पराजित विनताका कद्रूकी दासी होना; गरुडकी उत्पत्ति तथा देवताओंद्वारा उनकी स्तुति ...	९१
११-	कुण्डुभकी व्यात्मकया तथा उसके द्वारा रुद्रकी अहिंसाका उपदेश ...	७३	२४-	गरुडके द्वारा अपने तेज और शरीरका संकोच तथा सूर्यके क्रोधजनित तीव्र तेजकी शान्तिके लिये अरुणका उनके रथपर स्थित होना ...	९३
१२-	जन्मेजयके सर्पसत्रके विषयमें रुद्रकी जिज्ञासा और पिताद्वारा उसकी पूर्ति ...	७४	२५-	सूर्यके तापसे मूर्च्छित हुए सर्पोंकी रक्षाके लिये कद्रूद्वारा इन्द्रदेवकी स्तुति ...	९५
( आस्तीकपर्व )					
१३-	जरत्कारुका अपने पितरोंके अनुरोधसे विवाहके लिये उद्यत होना ...	७५	२६-	इन्द्रद्वारा की हुई वधसे सर्पोंकी प्रसन्नता ...	९६
			२७-	रामणीयक द्वीपके मनोरम वनका वर्णन तथा गरुडका वास्तव्यसे छूटनेके लिये सर्पोंसे उपाय पूछना ...	९७
			२८-	गरुडका अमृतके लिये जाना और अपनी माता-की आज्ञाके अनुसार निषादोंका भक्षण करना ...	९८
			२९-	कश्यपजीका गरुडको हाथी और कछुएके पूर्व-जन्मकी कथा सुनाना; गरुडका उन दोनोंको पकड़कर एक दिग्घ्न वटवृक्षकी शाखापर ले जाना और उस शाखाका टूटना ...	१००

- ३०-गरुडका काश्यपजीसे मित्रता; उनकी प्रार्थनासे बालविल्य ऋषियोंका शस्त्र छोड़कर तपके लिये प्रस्थान और गरुडका निर्जन पर्वतपर उस शाखाको छोड़ना ... १०३
- ३१-इन्द्रके द्वारा बालविल्योंका अपमान और उनकी तपस्याके प्रभावसे अरुण-गरुडकी उत्पत्ति ... १०६
- ३२-गरुडका देवताओंके साथ युद्ध और देवताओंकी पराजय ... १०९
- ३३-गरुडका अमृत लेकर लौटना; मार्गमें भगवान् विष्णुसे चर पाना एवं उनपर इन्द्रके द्वारा वज्र-प्रहार ... ११०
- ३४-इन्द्र और गरुडकी मित्रता; गरुडका अमृत लेकर नागोंके पास आना और विनताको दासी-भाबसे चुड़ाना तथा इन्द्रद्वारा अमृतका अपहरण ११२
- ३५-मुख्य-मुख्य नागोंके नाम ... ११४
- ३६-शेषनागकी तपस्या; ब्रह्माजीसे वर-प्राप्ति तथा पृथ्वीको सिरपर धारण करना ... ११५
- ३७-माताके शापसे बचनेके लिये वासुकि आदि नागोंका परस्पर परामर्श ... ११७
- ३८-वासुकिकी वहिन जरत्कारका जरत्कार मुनिके साथ विवाह करनेका निश्चय ... १२०
- ३९-ब्रह्माजीकी आज्ञासे वासुकिका जरत्कार मुनिके साथ अपनी वहिनको ब्याहनेके लिये प्रयत्नशील होना ... १२१
- ४०-जरत्कारकी तपस्या; राजा परीक्षितका उपाख्यान तथा राजाके द्वारा मुनिके कंधेपर मृतक सौंघ रखनेके कारण दुखी हुए कृशका शृङ्गीको उत्तेजित करना ... १२२
- ४१-शृङ्गी ऋषिका राजा परीक्षितको शाप देना और शमीकका अपने पुत्रको शान्त करते हुए शापको अनुचित बताना ... १२४
- ४२-शमीकका अपने पुत्रको समझाना और गौरमुखको राजा परीक्षितके पास भेजना; राजाद्वारा आत्म-रक्षाकी व्यवस्था तथा तक्षक नाग और काश्यपकी वातचीत ... १२७
- ४३-तक्षकका धन देकर काश्यपको लौटा देना और छलसे राजा परीक्षितके समीप पहुँचकर उन्हें डँसना १२९
- ४४-जनमेजयका राज्याभिषेक और विवाह ... १३२
- ४५-जरत्कारको अपने पितरोंका दर्शन और उनसे वार्तालाप ... १३३
- ४६-जरत्कारका शर्तके साथ विवाहके लिये उद्यत होना और नागराज वासुकिका जरत्कार नामकी कन्याको लेकर आना ... १३५

- ४७-जरत्कार मुनिका नागकन्याके साथ विवाह; नाग-कन्या जरत्कारद्वारा पतिसेवा तथा पतिका उल्लेख त्याग कर तपस्याके लिये गमन ... १३७
- ४८-वासुकि नागकी चिन्ता; वहिनद्वारा उसका निवारण तथा आस्तीकका जन्म एवं विद्याध्ययन १४०
- ४९-राजा परीक्षितके धर्मधर्म आचार तथा उत्तम गुणोंका वर्णन; राजाका शिकारके लिये जाना और उनके द्वारा शमीक मुनिका तिरस्कार ... १४१
- ५०-शृङ्गी ऋषिका परीक्षितको शाप; तक्षकका काश्यपको लौटाकर छलसे परीक्षितको डँसना और पिताकी मृत्युका वृत्तान्त सुनकर जनमेजयकी तक्षकसे बदला लेनेकी प्रतिज्ञा ... १४४
- ५१-जनमेजयके सर्पयज्ञका उपक्रम ... १४७
- ५२-सर्पयज्ञका आरम्भ और उसमें सर्पोंका विनाश १४८
- ५३-सर्पयज्ञके ऋत्विजोंकी नामावली; सर्पोंका भयंकर विनाश; तक्षकका इन्द्रकी शरणमें जाना तथा वासुकिका अपनी वहिनसे आस्तीकको यज्ञमें भेजनेके लिये कहना ... १४९
- ५४-माताकी आज्ञासे मामाको सन्तुष्टना देकर आस्तीकका सर्पयज्ञमें जाना ... १५१
- ५५-आस्तीकके द्वारा यजमान; यज्ञ; ऋत्विज; सदस्य-गण और अग्निदेवकी स्तुति-प्रशंसा ... १५३
- ५६-राजाका आस्तीककी वर देनेके लिये तैयार होना; तक्षक नागकी व्याकुलता तथा आस्तीकका वर माँगना ... १५५
- ५७-सर्पयज्ञमें दग्ध हुए प्रधान-प्रधान सर्पोंके नाम ... १५८
- ५८-यज्ञकी समाप्ति एवं आस्तीकका सर्पोंसे वर प्राप्त करना ... १५९
- ( अंशावतरणपूर्व )
- ५९-महाभारतका उपक्रम ... १६२
- ६०-जनमेजयके यज्ञमें व्यासजीका आगमन; सत्कार तथा राजाकी प्रार्थनासे व्यासजीका वैशम्पायनजीसे महाभारत-कथा सुनानेके लिये कहना ... १६२
- ६१-कौरव-पाण्डवोंमें फूट और युद्ध होनेके वृत्तांतका सूत्ररूपमें निर्देश ... १६४
- ६२-महाभारतकी महत्ता ... १६७
- ६३-राजा उपरिचरका चरित्र तथा सत्यवती; व्याधादि प्रमुख पात्रोंकी संक्षिप्त जन्म-कथा ... १७२
- ६४-ब्राह्मणोंद्वारा क्षत्रिय-वंशकी उत्पत्ति और वृद्धि तथा उस समयके धार्मिक राज्यका वर्णन; असुरोंका जन्म और उनके भाषे पीडित पृथ्वीका ब्रह्माजीकी वरमार्ग जाना तथा ब्रह्माजीका देवताओंको अपने अंशसे पृथ्वीपर जन्म देनेका आदेश ... १८०

( सम्भवपर्व )

- ६५-मरीचि आदि महर्षियों तथा अदिति आदि दक्ष-  
कन्याओंके वंशका विवरण ... १८३
- ६६-महर्षियों तथा कश्यप-पत्नियोंकी संतान-परम्पराका  
वर्णन ... १८७
- ६७-देवता और दैत्य आदिके अंशावतारोंका दिग्दर्शन १९१
- ६८-राजा दुष्यन्तकी अद्भुत शक्ति तथा राज्यशान-  
की क्षमताका वर्णन ... २०१
- ६९-दुष्यन्तका शिकारके लिये वनमें जाना और  
विभिन्न हिंसक वन-जन्तुओंका वध करना ... २०२
- ७०-तपोवन और कण्वके आश्रमका वर्णन तथा राजा  
दुष्यन्तका उस आश्रममें प्रवेश ... २०४
- ७१-राजा दुष्यन्तका शकुन्तलाके साथ वार्तालाप;  
शकुन्तलाके द्वारा अपने जन्मका कारण बतलाना  
तथा उसी प्रसङ्गमें विश्वामित्रकी तपस्यासे इन्द्र-  
का चिन्तित होकर मेनकाको मुनिका तपोमंग  
करनेके लिये भेजना ... २०७
- ७२-मेनका-विश्वामित्र-मिलन; कन्याकी उत्पत्ति;  
शकुन्तला पक्षियोंके द्वारा उसकी रक्षा और  
कण्वका उसे अपने आश्रमपर लाकर शकुन्तला  
नाम रखकर पालन करना ... २११
- ७३-शकुन्तला और दुष्यन्तका गान्धर्व विवाह और  
महर्षि कण्वके द्वारा उसका अनुमोदन ... २१३
- ७४-शकुन्तलाके पुत्रका जन्म; उसकी अद्भुत शक्ति;  
पुत्रसहित शकुन्तलाका दुष्यन्तके यहाँ जाना;  
दुष्यन्त-शकुन्तला-संवाद; आकाशवाणीद्वारा  
शकुन्तलाकी शुद्धिका समर्थन और भरतका  
राज्याभिषेक ... २१७
- ७५-दक्ष, वैवस्वत मनु तथा उनके पुत्रोंकी उत्पत्ति;  
पुरूरवा; नहुष और ययातिके चरित्रोंका  
संक्षेपसे वर्णन ... २२१
- ७६-कचका क्षिप्रभावसे शुक्राचार्य और देवयानी-  
की सेवामें संलग्न होना और अनेक कष्ट सहने-  
के पश्चात् मृतसंजीविनी विद्या प्राप्त करना ... २३५
- ७७-देवयानीका कचसे पालिग्रहणके लिये अनुरोध;  
कचकी अस्वीकृति तथा दोनोंका एक-दूसरेको  
शाप देना ... २४१
- ७८-देवयानी और शर्मिष्ठाका कलह; शर्मिष्ठाद्वारा  
कुऐमें गिरायी गयी देवयानीकी ययातिका  
निकालना और देवयानीका शुक्राचार्यजीके साथ  
वार्तालाप ... २४३
- ७९-शुक्राचार्यद्वारा देवयानीको समझाना और  
देवयानीका असंतोष ... २४६
- ८०-शुक्राचार्यका वृषपर्वाकी फटकारना तथा उसे  
छोड़कर जानेके लिये उद्यत होना और वृषपर्वाके  
आदेशसे शर्मिष्ठाका देवयानीकी दासी बनकर  
शुक्राचार्य तथा देवयानीको वंद्य करना ... २४८

- ८१-सखियोंसहित देवयानी और शर्मिष्ठाका वन-  
विहार; राजा ययातिका आगमन; देवयानीकी  
उनके साथ बातचीत तथा विवाह ... २५१
- ८२-ययातिसे देवयानीको पुत्रप्राप्ति; ययाति और  
शर्मिष्ठाका एकान्तमिलन और उनसे एक पुत्र-  
का जन्म ... २५४
- ८३-देवयानी और शर्मिष्ठाका संवाद; ययातिसे  
शर्मिष्ठाके पुत्र होनेकी बात जानकर देवयानी-  
का रुठकर पिताके पास जाना; शुक्राचार्यका  
ययातिको बूढ़े होनेका शाप देना ... २५६
- ८४-ययातिका अपने पुत्र यदु; त्वंसु; दुष्यु और  
अनुसे अपनी युवावस्था देकर वृद्धावस्था लेनेके  
लिये आग्रह और उनके अस्वीकार करनेपर  
उन्हें शाप देना; फिर अपने पुत्र पूर्वको जरावस्था  
देकर उनकी युवावस्था लेना तथा उन्हें वर-  
प्रदान करना ... २६०
- ८५-राजा ययातिका विषय-सेवन और वैराग्य तथा  
पूर्वका राज्याभिषेक करके वनमें जाना ... २६३
- ८६-वनमें राजा ययातिकी तपस्या और उन्हें  
स्वर्गलोककी प्राप्ति ... २६६
- ८७-इन्द्रके पृच्छनेपर ययातिका अपने पुत्र पूर्वको  
दिये हुए उपदेशकी चर्चा करना ... २६७
- ८८-ययातिका स्वर्गसे पतन और अष्टकका  
उनसे प्रश्न करना ... २६८
- ८९-ययाति और अष्टकका संवाद ... २७०
- ९०-अष्टक और ययातिका संवाद ... २७३
- ९१-ययाति और अष्टकका आश्रमधर्म-  
सम्बन्धी संवाद ... २७६
- ९२-अष्टक-ययाति-संवाद और ययातिद्वारा दूतोंके  
दिये हुए पुण्यदानकी अस्वीकार करना ... २७८
- ९३-राजा ययातिका वसुमान् और शिविके प्रतिग्रहको  
अस्वीकार करना तथा अष्टक आदि चारों  
राजाओंके साथ स्वर्गमें जाना ... २८०
- ९४-यूधवंशका वर्णन ... २८४
- ९५-दक्ष प्रजापतिसे लेकर पुरुवंश; भरतवंश  
एवं पाण्डुवंशकी परम्पराका वर्णन ... २८८
- ९६-महाभियको ब्रह्मजीका शाप तथा शम्भुप्रसा  
वसुओंके साथ गङ्गाकी बातचीत ... २९५
- ९७-राजा प्रतीका गङ्गाको पुत्रवधूके रूपमें स्वीकार  
करना और दान्तदुका जन्म; राज्याभिषेक तथा  
गङ्गासे मिलना ... २९६
- ९८-दान्तदु और गङ्गाका कुछ शतोंके साथ  
सम्बन्ध; वसुओंका जन्म और शापसे उद्धार  
तथा भीष्मकी उत्पत्ति ... २९९

- १९-महर्षि वसिष्ठद्वारा वसुओंको शाप प्राप्त होनेकी कथा ३०१
- १००-शान्तनुके रूप, गुण और सदाचारकी प्रशंसा, गङ्गाजीके द्वारा सुशिक्षित पुत्रकी प्राप्ति तथा देवव्रतकी भीष्म-प्रतिज्ञा ... ३०४
- १०१-सत्यवतीके गर्भसे चित्राङ्गद और विचित्रवीर्यकी उत्पत्ति, शान्तनु और चित्राङ्गदका निधन तथा विचित्रवीर्यका राज्याभिषेक ... ३१३
- १०२-भीष्मके द्वारा स्वयंवरसे काशिराजकी कन्याओंका हरण, युद्धमें सब राजाओं तथा शाल्वकी पराजय, अम्बिका और अम्बालिकाके साथ विचित्रवीर्यका विवाह तथा निधन ... ३१४
- १०३-सत्यवतीका भीष्मसे राज्य ग्रहण और संतानोत्पादनके लिये आग्रह तथा भीष्मके द्वारा अपनी प्रतिज्ञा बतलाते हुए उसकी अस्वीकृति ३१९
- १०४-भीष्मकी सम्मतिसे सत्यवतीद्वारा व्यासका आवाहन और व्यासजीका माताकी आज्ञासे कुरुवंशकी वृद्धिके लिये विचित्रवीर्यकी पत्नियोंके गर्भसे संतानोत्पादन करनेकी स्वीकृति देना ... ३२१
- १०५-व्यासजीके द्वारा विचित्रवीर्यके क्षेत्रसे धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुरकी उत्पत्ति ... ३२५
- १०६-महर्षि माण्डव्यका शूलीपर चढ़ाया जाना ... ३२७
- १०७-माण्डव्यका धर्मराजको शाप देना ... ३२८
- १०८-धृतराष्ट्र आदिके जन्म तथा भीष्मजीके धर्मपूर्ण शासनसे कुरुदेशकी सर्वाङ्गीण उन्नतिका दिग्दर्शन ३३०
- १०९-राजा धृतराष्ट्रका विवाह ... ३३२
- ११०-कुन्तीको दुर्वाससे मन्त्रकी प्राप्ति, सूर्यदेवका आवाहन तथा उनके संयोगसे कर्णका जन्म एवं कर्णके द्वारा इन्द्रको कवच और कुण्डलोंका दान ३३३
- १११-कुन्तीद्वारा स्वयंवरमें पाण्डुका वरण और उनके साथ विवाह ... ३३६
- ११२-माद्रीके साथ पाण्डुका विवाह तथा राजा पाण्डुकी दिग्विजय ... ३३७
- ११३-राजा पाण्डुका पत्नियोंसहित वनमें निवास तथा विदुरका विवाह ... ३४०
- ११४-धृतराष्ट्रके गान्धारीसे एक सौ पुत्र तथा एक कन्याकी तथा सेवा करनेवाली वैश्यजातीय सुचतीसे सुबल नामक एक पुत्रकी उत्पत्ति ... ३४१
- ११५-दुःशलके जन्मकी कथा ... ३४४
- ११६-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंकी नामावली ... ३४६
- ११७-राजा पाण्डुके द्वारा मृगरूपधारी श्रुनिका वध तथा उनसे शापकी प्राप्ति ... ३४७
- ११८-पाण्डुका अनुत्पत्ति, संन्यास लेनेका निश्चय तथा पत्नियोंके अनुरोधसे वानप्रस्थ-आश्रममें प्रवेश ... ३४८
- ११९-पाण्डुका कुन्तीकी पुत्र-प्राप्तिके लिये प्रयत्न करनेका आदेश ... ३५३
- १२०-कुन्तीका पाण्डुको व्युत्पत्तिस्थके मृत शरीरसे उसकी पतिव्रता पत्नी भद्राके द्वारा पुत्र-प्राप्तिको कथन ... ३५६
- १२१-पाण्डुका कुन्तीको समझाना और कुन्तीका पतिकी आज्ञासे पुत्रोत्पत्तिके लिये धर्मदेवताका आवाहन करनेके लिये उद्यत होना ... ३५९
- १२२-सुभिष्टिर, भीम और अर्जुनकी उत्पत्ति ... ३६१
- १२३-नकुल और सहदेवकी उत्पत्ति तथा पाण्डु-पुत्रोंके नामकरण-संस्कार ... ३६६
- १२४-राजा पाण्डुकी मृत्यु और माद्रीका उनके साथ चितारोहण ... ३७०
- १२५-श्रुषियोंका कुन्ती और पाण्डवोंको लेकर हस्तिनापुर जाना और उन्हें भीष्म आदिके हाथों सौंपना ... ३७५
- १२६-पाण्डु और माद्रीकी अश्रुियोंका दाह-संस्कार तथा भार्गव-गन्धर्वोंद्वारा उनके लिये जलाञ्जलिदान ... ३७७
- १२७-पाण्डवों तथा धृतराष्ट्रपुत्रोंकी वाल्मीकीदा, दुर्योधनका भीमसेनको विष खिलाना तथा गङ्गामें डकेलना और भीमका नागलोकमें पहुँच कर आठ कुण्डोंके दिव्य रसका पान करना ... ३७९
- १२८-भीमसेनके न आनेसे कुन्ती आदिकी चिन्ता, नागलोकसे भीमसेनका आगमन तथा उनके प्रति दुर्योधनकी कुचेष्टा ... ३८४
- १२९-कृपाचार्य, द्रोण और अधस्थामाकी उत्पत्ति तथा द्रोणकी परशुरामजीसे अस्त्र-शस्त्रकी प्राप्तिकी कथा ३८७
- १३०-द्रोणका द्रुपदसे तिरस्कृत हो हस्तिनापुरमें आना, राजकुमारोंसे उनकी मेट, उनकी बीटा और अँगुठीकी कुर्छेसे निकालना एवं भीष्मका उन्हें अपने यहाँ सम्मानपूर्वक रखना ... ३९१
- १३१-द्रोणाचार्यद्वारा राजकुमारोंकी शिक्षा, एकलव्यकी गुरुभक्ति तथा आचार्यद्वारा शिष्योंकी परीक्षा ३९७
- १३२-अर्जुनके द्वारा लक्ष्यवेध, द्रोणका ग्राहसे छुटकारा और अर्जुनको ब्रह्मशिर नामक अस्त्रकी प्राप्ति ४०२
- १३३-राजकुमारोंका रङ्गभूमिमें अस्त्र-कौशल दिखाना ४०४
- १३४-भीमसेन, दुर्योधन तथा अर्जुनके द्वारा अस्त्र-कौशलका प्रदर्शन ... ४०७
- १३५-कर्णका रङ्गभूमिमें प्रवेश तथा राज्याभिषेक ... ४०९
- १३६-भीमसेनके द्वारा कर्णका तिरस्कार और दुर्योधनद्वारा उसका सम्मान ... ४१३



- १३७-द्रोणका दिव्योद्धार द्रुपदपर आक्रमण करवाना,  
अर्जुनका द्रुपदको बंदी बनाकर छाना और  
द्रोणद्वारा द्रुपदको आधा राज्य देकर मुक्त कर देना ४१५  
१३८-सुभिष्ठिरका युवराजपदपर अभिषेक, पाण्डवोंके  
शौर्य, कीर्ति और बलके विस्तारसे  
धृतराष्ट्रको चिन्ता ... ४२०

- १३९-कणिकका धृतराष्ट्रको कूटनीतिका उपदेश ... ४२२

### ( जतुगृहपर्व )

- १४०-पाण्डवोंके प्रति पुरवासियोंका अनुराग देखकर  
दुर्योधनकी चिन्ता ... ४२९  
१४१-दुर्योधनका धृतराष्ट्रसे पाण्डवोंको वारणावत  
भेज देनेका प्रस्ताव ... ४३२  
१४२-धृतराष्ट्रके आदेशसे पाण्डवोंकी वारणावत-यात्रा ४३४  
१४३-दुर्योधनके आदेशसे पुरोचनका वारणावतनगर-  
में लक्ष्मणहम बनाना ... ४३५  
१४४-पाण्डवोंकी वारणावत-यात्रा तथा उनको विदुर-  
का गुप्त उपदेश ... ४३६  
१४५-वारणान्तमें पाण्डवोंका स्वागत, पुरोचनका  
सत्कारपूर्वक उन्हें ठहराना, लक्ष्मणहमें निवासकी  
व्यवस्था और सुभिष्ठिर एवं भीमसेनकी बातचीत ४३९  
१४६-विदुरके भेजे हुए सनकद्वारा लक्ष्मणहमें  
सुरंगका निर्माण ... ४४१  
१४७-लक्ष्मणहका दाह और पाण्डवोंका सुरंगके  
रास्ते निकल जाना ... ४४३  
१४८-विदुरजीके भेजे हुए नाविकका पाण्डवोंको  
गङ्गाजीके पार उतारना ... ४४५  
१४९-भृशराष्ट्र आदिके द्वारा पाण्डवोंके लिये शोकप्रकाश  
एवं अलज्जलि-दान तथा पाण्डवोंका वनमें प्रवेश ४४६  
१५०-माता कुन्तीके लिये भीमसेनका जल ले आना,  
माता और भाइयोंकी भूमिपर लोभ देखकर  
भीमका विषाद एवं दुर्योधनके प्रति उनका क्रोध ४४९

### ( हिडिम्बवधपर्व )

- १५१-हिडिम्बके भेजनेसे हिडिम्बा राक्षसीका पाण्डवोंके  
पास आना और भीमसेनसे उसका वार्तालाप ... ४५२  
१५२-हिडिम्बका आना, हिडिम्बाका उससे भयभीत  
होना और भीम तथा हिडिम्बासुरका युद्ध ... ४५५  
१५३-हिडिम्बाका कुन्ती आदिसे अपना मनोभाव प्रकट  
करना तथा भीमसेनके द्वारा हिडिम्बासुरका वध ४५९  
१५४-सुभिष्ठिरका भीमसेनको हिडिम्बाके वधसे रोकना,  
हिडिम्बाकी भीमसेनके लिये प्रार्थना, भीमसेन और  
हिडिम्बाका मिलन तथा धटोकचकी उत्पत्ति ... ४६१  
१५५-पाण्डवोंको व्यासजीका दर्शन और उनका  
एककक्ष नगरीमें प्रवेश ... ४६७

### ( वकवधपर्व )

- १५६-ब्राह्मणपरिवारका कष्ट दूर करनेके लिये  
कुन्तीकी भीमसेनसे बातचीत तथा ब्राह्मणके  
चिन्तापूर्ण उद्धार ... ४६९  
१५७-ब्राह्मणीका स्वयं मरनेके लिये उद्यत होकर  
पतिसे जीवित रहनेके लिये अनुरोध करना ... ४७२  
१५८-ब्राह्मण-कन्याके त्याग और विवेकपूर्ण वचन  
तथा कुन्तीका उम्र सबके पास जाना ... ४७५  
१५९-कुन्तीके पृच्छनेपर ब्राह्मणका उनसे अपने दुःख-  
का कारण बताना ... ४७६  
१६०-कुन्ती और ब्राह्मणकी बातचीत ... ४७८  
१६१-भीमसेनको राक्षसके पास भेजनेके विषयमें  
सुभिष्ठिर और कुन्तीकी बातचीत ... ४७९  
१६२-भीमसेनका भोजन-सामग्री लेकर बकासुरके पास  
जाना और स्वयं भोजन करना तथा युद्ध करके  
उसे मार गिराना ... ४८१  
१६३-बकासुरके मर्ते राक्षसोंका भयभीत होकर  
पलायन और नगरनिवासियोंकी प्रसन्नता ... ४८३

### ( चैत्ररथपर्व )

- १६४-पाण्डवोंका एक ब्राह्मणसे विविध कथाएँ सुनना ४८५  
१६५-द्रोणके द्वारा द्रुपदके अपमानित होनेका वृत्तान्त ४८६  
१६६-द्रुपदके सबसे धृष्टद्युम्न और द्रौपदीकी उत्पत्ति ४८८  
१६७-कुन्तीकी अपने पुत्रोंसे पूछकर पञ्चालदेशमें  
जानेकी तैयारी ... ४९४  
१६८-न्यासजीका वाण्डवोंसे द्रौपदीके पूर्वजन्मका  
वृत्तान्त सुनाना ... ४९५  
१६९-पाण्डवोंकी पञ्चाल-यात्रा और अर्जुनके द्वारा  
चित्ररथ गन्धर्वकी पराजय एवं उन दोनोंकी मित्रता ४९६  
१७०-सूर्यकन्या तपतीकी देखकर राजा संवरणका  
मोहित होना ... ५०२  
१७१-तपती और संवरणकी बातचीत ... ५०५  
१७२-वसिष्ठजीकी सहायतासे राजा संवरणको  
तपतीकी प्राप्ति ... ५०७  
१७३-गन्धर्वका वसिष्ठजीकी महत्ता बताते हुए किसी श्रेष्ठ  
ब्राह्मणको पुरोहित बनानेके लिये आम्रह करना ५१०  
१७४-वसिष्ठजीके अद्भुत क्षमा-बलके आगे  
विश्वामित्रजीका पराभव ... ५११  
१७५-शक्तिके शापसे कल्माषपादका राक्षस होना,  
विश्वामित्रकी प्रेरणासे राक्षसद्वारा वसिष्ठके  
पुत्रोंका भक्षण और वसिष्ठका शोक ... ५१६  
१७६-कल्माषपादका शापसे उद्धार और वसिष्ठजीके  
द्वारा उन्हें अश्मक नामक पुत्रकी प्राप्ति ... ५१९  
१७७-शक्तिपुत्र पराशरका जन्म और पिताकी मृत्युका  
हाल सुनकर कुपित हुए पराशरको शान्त करनेके  
लिये वसिष्ठजीका उन्हें औषोपाख्यान सुनाना ५२३

- १७८-पितरोंद्वारा और्यके शोभका निवारण ... ५२४  
 १७९-और्य और पितरोंकी बातचीत तथा और्यका अपनी  
 शोभाग्निको बह्वानलरूपसे समुद्रमें त्यागना ५२६  
 १८०-पुलस्त्य आदि महर्षियोंके समझानेसे पराशरजीके  
 द्वारा राक्षससत्त्वकी समाप्ति ... ५२८  
 १८१-राजा कल्माषपादकी ब्राह्मणी आङ्गिरसीका शाप ५२९  
 १८२-पाण्डवोंका धीम्यको अपना पुरोहित बनाना ... ५३१

### ( स्वयंवरपर्व )

- १८३-पाण्डवोंकी प्रज्ञालब्धना और भार्यमें  
 ब्राह्मणोंसे बातचीत ... ५३२  
 १८४-पाण्डवोंका द्रुपदकी राजधानीमें जाकर कुम्हारके  
 यहाँ रहना, स्वयंवरसभाका वर्णन तथा  
 धृष्टद्युम्नकी घोषणा ... ५३४  
 १८५-धृष्टद्युम्नका द्रौपदीके स्वयंवरमें आवे हुए  
 राजाओंका परिचय देना ... ५३७  
 १८६-राजाओंका लक्ष्यवेधके लिये उद्योग और  
 असफल होना ... ५३८  
 १८७-अर्जुनका लक्ष्यवेध करके द्रौपदीको प्राप्त करना ५४१  
 १८८-द्रुपदको मारनेके लिये उद्यत हुए राजाओंका  
 सामना करनेके लिये भीम और अर्जुनका  
 उद्यत होना और उनके निषवर्ग भगवान्  
 श्रीकृष्णका बलरामजीसे वार्तालाप ... ५४४  
 १८९-अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कर्ण तथा  
 शल्यकी पराजय और द्रौपदीसहित भीम-  
 अर्जुनका अपने डेरेपर जाना ... ५४६  
 १९०-कुन्ती, अर्जुन और युधिष्ठिरकी बातचीत, पाँचों  
 पाण्डवोंका द्रौपदीके साथ विवाहका विचार तथा  
 बलराम और श्रीकृष्णकी पाण्डवोंसे भेंट ... ५४९  
 १९१-धृष्टद्युम्नका गुप्तरूपसे वहाँकी सब हाल देखकर  
 राजा द्रुपदके पास आना तथा द्रौपदीके  
 विषयमें द्रुपदका प्रश्न ... ५५२

### ( वैवाहिकपर्व )

- १९२-धृष्टद्युम्नके द्वारा द्रौपदी तथा पाण्डवोंका हाल  
 सुनकर राजा द्रुपदका उनके पास पुरोहितकी  
 भोजना तथा पुरोहित और युधिष्ठिरकी बातचीत ५५४  
 १९३-पाण्डवों और कुन्तीका द्रुपदके घरमें जाकर  
 सम्मानित होना और राजा द्रुपदद्वारा पाण्डवों-  
 के शील-स्वभावकी परीक्षा ... ५५७  
 १९४-द्रुपद और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा व्यासजी-  
 का आगमन ... ५५९  
 १९५-व्यासजीके सामने द्रौपदीका पाँच पुरुषोंसे  
 विवाह होनेके विषयमें द्रुपद, धृष्टद्युम्न और  
 युधिष्ठिरका अपने-अपने विचार व्यक्त करना ५६२

- १९६-व्यासजीका द्रुपदकी पाण्डवों तथा द्रौपदीके  
 पूर्वजन्मकी कथा सुनाकर दिव्य दृष्टि देना और  
 द्रुपदका उनकी दिव्य रूपोंकी शोभा कराना ... ५६४  
 १९७-द्रौपदीका पाँचों पाण्डवोंके साथ विवाह ... ५६९  
 १९८-कुन्तीका द्रौपदीको उपदेश और आदिर्वादि तथा  
 भगवान् श्रीकृष्णका पाण्डवोंके लिये उपहार  
 भोजना ... ५७१

### ( विदुरागमनराज्यलम्पपर्व )

- १९९-पाण्डवोंके विवाहसे दुर्योधन आदिकी चिन्ता,  
 धृतराष्ट्रका पाण्डवोंके प्रति प्रेमका दिखावा और  
 दुर्योधनकी कुमन्त्रणा ... ५७२  
 २००-धृतराष्ट्र और दुर्योधनकी बातचीत, शत्रुओंको  
 वशमें करनेके उपाय ... ५७७  
 २०१-पाण्डवोंको पराक्रमसे बचानेके लिये कर्ण-  
 की सम्मति ... ५७९  
 २०२-भीष्मकी दुर्योधनसे पाण्डवोंको आधा राज्य  
 देनेकी सलाह ... ५८०  
 २०३-द्रोणाचार्यकी पाण्डवोंको उपहार भेजने और  
 बुलानेकी सम्मति तथा कर्णके द्वारा उनकी  
 सम्मतिका विरोध करनेपर द्रोणाचार्यकी फटकार ५८२  
 २०४-बिदुरजीकी सम्मति—द्रोण और भीष्मके वचनों-  
 का ही समर्थन ... ५८४  
 २०५-धृतराष्ट्रकी आज्ञासे बिदुरका द्रुपदके यहाँ जाना  
 और पाण्डवोंको हस्तिनापुर भेजनेका  
 प्रस्ताव करना ... ५८६  
 २०६-पाण्डवोंका हस्तिनापुरमें आना और व्याधा  
 राज्य पाकर इन्द्रप्रस्थ नगरका निर्माण करना  
 एवं भगवान् श्रीकृष्ण और बलरामजीका  
 द्वारकाके लिये प्रस्थान ... ५८८  
 २०७-पाण्डवोंके यहाँ नारदजीका आगमन और उनमें  
 पूष्ट न हो इसके लिये कुछ नियम बनानेके  
 लिये प्रेरणा करके सुन्द और उपसुन्दकी कथा-  
 की प्रस्तावित करना ... ५९७  
 २०८-सुन्द-उपसुन्दकी तपस्या, ब्रह्माजीके द्वारा उन्हें  
 वर प्राप्त होना और दैत्योंके यहाँ आगन्दीत्य ६००  
 २०९-सुन्द और उपसुन्दद्वारा मूर्तापूर्ण कर्णसे  
 तिलोत्तमापर विजय प्राप्त करना ... ६०२  
 २१०-तिलोत्तमाकी लसति, उसके लसका जाकर्षण  
 तथा सुन्दोपसुन्दकी मोहित करनेके लिये उसका  
 प्रस्थान ... ६०४  
 २११-तिलोत्तमापर मोहित होकर सुन्द-उपसुन्दका  
 आपसमें लड़ना और मारा जाना एवं तिलोत्तमा-  
 की ब्रह्माजीद्वारा वर-प्राप्ति तथा पाण्डवोंका  
 द्रौपदीके विषयमें नियम-निर्धारण ... ६०६

## ( अर्जुनवनवासपर्व )

- २१२-अर्जुनके द्वारा ब्राह्मणके गोधनकी रक्षाके लिये नियमभङ्ग और वनकी ओर प्रस्थान ... ६०८
- २१३-अर्जुनका गङ्गाद्वारमें ठहरना और वहाँ उनका उलपीके साथ मिलन ... ६११
- २१४-अर्जुनका पूर्वदिशाके तीर्थोंमें भ्रमण करते हुए मणिपूरमें जाकर चित्राङ्गदाका पालिश्रवण करके उसके गर्भसे एक पुत्र उत्पन्न करना ... ६१२
- २१५-अर्जुनके द्वारा वर्गा अप्सराका ग्राह्योनिसे उद्धार तथा वर्गाकी आत्मकथाका आरम्भ ... ६१५
- २१६-वर्गाकी प्रार्थनासे अर्जुनका शेष चारों अप्सराओंको भी शपथमुक्त करके मणिपूर जाना और चित्राङ्गदासे मिलकर मोक्षार्थ तीर्थकी प्रस्थान करना ... ६१७
- २१७-अर्जुनका प्रभासतीर्थमें श्रीकृष्णसे मिलना और उन्हींके साथ उनका रैवतक पर्वत एवं द्वारकापुरीमें आना ... ६२९

## ( सुभद्राहरणपर्व )

- २१८-रैवतक पर्वतके उत्सवमें अर्जुनका सुभद्रापर आगम होना और श्रीकृष्ण तथा युधिष्ठिरकी अनुमतिसे उसे हर ले जानेका निश्चय करना ... ६२१
- २१९-यादवोंकी युद्धके लिये तैयारी और अर्जुनके प्रति बलरामजीके श्रोत्रपूर्ण उद्धार ... ६२३

## ( हरणाहरणपर्व )

- २२०-द्वारकामें अर्जुन और सुभद्राका विवाह, अर्जुनके इन्द्रप्रस्थ पहुँचनेपर श्रीकृष्ण आदिका दहेज लेकर वहाँ जाना, द्रौपदीके पुत्र एवं अभिमन्युके जन्म-संस्कार और शिक्षा ... ६२५

## ( खाण्डवदाहपर्व )

- २२१-युधिष्ठिरके राज्यकी विशेषता, कृष्ण और अर्जुनका खाण्डववनमें जाना तथा उन दोनोंके पास ब्राह्मण-वेपथारी अग्निदेवका आगमन ... ६३१

- २२२-अग्निदेवका खाण्डववनको जलानेके लिये श्रीकृष्ण और अर्जुनसे सहायताकी याचना करना, अग्निदेव उस वनकी क्यों जलाना चाहते थे, इसे बतानेके प्रसङ्गमें राजा दधेतिकी कथा ... ६३४
- २२३-अर्जुनका अग्निही प्रार्थना स्वीकार करके उनसे दिव्य धनुष एवं रथ आदि माँगना ... ६३९
- २२४-अग्निदेवका अर्जुन और श्रीकृष्णको दिव्य धनुष, अक्षय तरकस, दिव्य रथ और चक्र आदि प्रदान करना तथा उन दोनोंकी सहायतासे खाण्डववन-को जलाना ... ६४०
- २२५-खाण्डववनमें जलते हुए प्राणियोंकी दुर्दशा और इन्द्रके द्वारा जल बरसाकर आग बुझानेकी चेष्टा ... ६४३
- २२६-देवताओं आदिके साथ श्रीकृष्ण और अर्जुनका युद्ध ... ६४५

## ( मयदर्शनपर्व )

- २२७-देवताओंकी पराजय, खाण्डववनका विनाश और मयासुरकी रक्षा ... ६४८
- २२८-शार्ङ्गकीपारख्यान—मन्दपाल मुनिके द्वारा जरिता-शार्ङ्गिकासे पुत्रोंकी उत्पत्ति और उन्हें बचानेके लिये मुनिका अग्निदेवकी स्तुति करना ... ६५१
- २२९-जरिताका अपने वस्त्रोंकी रक्षाके लिये चिन्तित होकर विलाप करना ... ६५४
- २३०-जरिता और उसके वस्त्रोंका संवाद ... ६५५
- २३१-शार्ङ्गकोंके स्वयन्से प्रसन्न होकर अग्निदेवका उन्हें अभय देना ... ६५७
- २३२-मन्दपालका अपने बाल-वस्त्रोंसे मिलना ... ६५९
- २३३-इन्द्रदेवका श्रीकृष्ण और अर्जुनको वरदान तथा श्रीकृष्ण, अर्जुन और मयासुरका अग्निसे विदा लेकर एक साथ वसुनातटपर बैठना ... ६६१

## चित्र-सूची

## ( तिरंगा )

- १-जन्मसंस्कार ... १
- २-अवतारके लिये प्रार्थना ... १८३
- ३-सिंह-बाघोंमें बालक भरत ... २०२
- ४-कुमार भीमसेनका साँपोंपर कोष ... ३८३
- ५-एकलव्यकी गुरु-दक्षिणा ... ३९७
- ६-द्रौपदी-स्वयंवर ... ५४१
- ७-प्रभासतीर्थमें श्रीकृष्ण और अर्जुनका मिलन ... ५९७



## भीमरिः सभापर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
--------	------	--------------	--------	------	--------------

### ( सभाक्रियापर्व )

- |  |         |
|--|---------|
| १-भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञाके अनुसार मयासुर-<br>द्वारा सभाभवन बनानेकी तैयारी                                      | ... ६६५ |
| २-श्रीकृष्णकी द्वारका-यात्रा   | ... ६६७ |
| ३-मयासुरका भीमसेन और अर्जुनको गदा और<br>शङ्ख लखकर देना तथा उसके द्वारा अद्भुत<br>सभाका निर्माण                   | ... ६६९ |
| ४-मयाद्वारा निर्मित सभाभवनमें धर्मराज युधिष्ठिरका<br>प्रवेश तथा सभामें स्थित मद्रूषियों और राजाओं<br>आदिका वर्णन | ... ६७२ |

### ( लोकपालसभाभयानपर्व )

- |  |         |
|--|---------|
| ५-नारदजीका युधिष्ठिरकी सभामें आगमन और<br>प्रश्नके रूपमें युधिष्ठिरको शिक्षा देना | ... ६७५ |
| ६-युधिष्ठिरकी दिव्य सभाओंके विषयमें जिज्ञासा                                     | ... ६८५ |
| ७-इन्द्रसभाका वर्णन  | ... ६८७ |
| ८-वर्मराजकी सभाका वर्णन  | ... ६८९ |
| ९-वक्रवर्णकी सभाका वर्णन   | ... ६९१ |
| १०-कुन्वेरकी सभाका वर्णन   | ... ६९३ |
| ११-वृद्धाजीकी सभाका वर्णन  | ... ६९५ |
| १२-राज हरिश्चन्द्रका माहत्म्य तथा युधिष्ठिरके<br>प्रति राजा पाण्डुका संदेश       | ... ६९९ |

### ( राजसूयारम्भपर्व )

- |   |         |
|---|---------|
| १३-युधिष्ठिरका राजसूयविषयक संकल्प और उसके<br>विषयमें भाइयों, मन्त्रियों, मुनियों तथा<br>श्रीकृष्णसे सलाह लेना | ... ७०२ |
| १४-श्रीकृष्णकी राजसूययज्ञके लिये सम्मति   | ... ७०६ |
| १५-जरासंधके विषयमें राजा युधिष्ठिर, भीम और<br>श्रीकृष्णकी बातचीत  | ... ७११ |
| १६-जरासंधको जीतनेके विषयमें युधिष्ठिरके उत्साह<br>हीन होनेपर अर्जुनका उत्साहपूर्ण उद्धार                      | ... ७१३ |
| १७-श्रीकृष्णके द्वारा अर्जुनकी बातका अनुमोदन<br>तथा युधिष्ठिरको जरासंधकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग<br>सुनाना         | ... ७१४ |
| १८-जरा राक्षसीका अपना परिचय देना और<br>उसीके नामपर बालकका नामकरण होना   | ... ७१९ |

- |  |         |
|--|---------|
| १९-वणिकौशिक मुनिके द्वारा जरासंधका भविष्य-<br>कथन तथा वित्तके द्वारा उसका राज्याभिषेक<br>करके वनमें जाना | ... ७२० |
|--|---------|

### ( जरासंधसंधपर्व )

- |   |         |
|---|---------|
| २०-युधिष्ठिरके अनुमोदन करनेपर श्रीकृष्ण, अर्जुन<br>और भीमसेनकी मगध-यात्रा   | ... ७२२ |
| २१-श्रीकृष्णद्वारा मगधकी राजधानीकी प्रशंसा,<br>वैश्यक पर्वतशिखर और नगाड़ोंकी तोड़-फोड़-<br>कर तीनोंका नगर एवं राजभवनमें प्रवेश तथा<br>श्रीकृष्ण और जरासंधका संवाद | ... ७२४ |
| २२-जरासंध और श्रीकृष्णका संवाद तथा जरासंध-<br>की युद्धके लिये तैयारी एवं जरासंधका श्रीकृष्ण-<br>के साथ वैर होनेके कारणका वर्णन                                    | ... ७२८ |
| २३-जरासंधका भीमसेनके साथ युद्ध करनेका<br>निश्चय, भीम और जरासंधका भयानक युद्ध<br>तथा जरासंधकी थकावट  | ... ७३३ |
| २४-भीमके द्वारा जरासंधका वध, बंदी राजाओंकी<br>मुक्ति, श्रीकृष्ण आदिका भेंट लेकर इन्द्रप्रस्थमें<br>आना और वहाँसे श्रीकृष्णका द्वारका जाना                         | ... ७३६ |

### ( दिग्विजयपर्व )

- |   |         |
|---|---------|
| २५-अर्जुन आदि चारों भाइयोंकी दिग्विजयके लिये<br>यात्रा  | ... ७४१ |
| २६-अर्जुनके द्वारा अनेक देशों, राजाओं तथा<br>भगदत्तकी पराजय   | ... ७४३ |
| २७-अर्जुनका अनेक पर्वतीय देशोंपर विजय पाना  | ... ७४४ |
| २८-किम्पुवन्ध, हाटक तथा उत्तरकुम्भार विजय<br>प्राप्त करके अर्जुनका इन्द्रप्रस्थ लौटना                   | ... ७४६ |
| २९-भीमसेनका पूर्वदिशाको जीतनेके लिये प्रस्थान<br>और विभिन्न देशोंपर विजय पाना                           | ... ७५१ |
| ३०-भीमका पूर्वदिशाके अनेक देशों तथा राजाओं-<br>को जीतकर भारी धन-सम्पत्तिके साथ<br>इन्द्रप्रस्थमें लौटना | ... ७५२ |
| ३१-सहदेवके द्वारा दक्षिण दिशाकी विजय  | ... ७५४ |
| ३२-नकुलके द्वारा पश्चिम दिशाकी विजय   | ... ७५५ |

## ( राजसूयपर्व )

- ३३-युधिष्ठिरके शासनकी विशेषता; श्रीकृष्णकी आज्ञासे युधिष्ठिरका राजसूययज्ञकी दीक्षा लेना तथा राज्याओं, ब्राह्मणों एवं सगे-सम्बन्धियोंको बुलानेके लिये निमन्त्रण भेजना ... ७६६
- ३४-युधिष्ठिरके यज्ञमें सब देशके राजाओं, कौरवों तथा यादवोंका आगमन और उन सबके भोजन-विभ्राम आदिकी सुव्यवस्था ... ७७०
- ३५-राजसूययज्ञका वर्णन ... ७७२

## ( अर्घ्याभिहरणपर्व )

- ३६-राजसूययज्ञमें ब्राह्मणों तथा राजाओंका समागम, श्रीनारदजीके द्वारा श्रीकृष्ण-महिमाका वर्णन और भीष्मजीकी अनुमतिसे श्रीकृष्णकी अग्रपूजा ... ७७४
- ३७-शिष्टपालके आद्योपपूर्ण वचन ... ७७६
- ३८-युधिष्ठिरका शिष्टपालको सम्मानना और भीष्मजीका उसके आक्षेपोंका उत्तर देना ... ७७९
- ३९-सहदेवकी राजाओंको चुनौती तथा धृष्टके, धृष्टके शिष्टपाल आदि नरेशोंका युद्धके लिये उत्तम होना ... ८२६

## ( शिष्टपालवधपर्व )

- ४०-युधिष्ठिरकी चिन्ता और भीष्मजीका उन्हें शान्तना देना ... ८२८
- ४१-शिष्टपालद्वारा भीष्मकी निन्दा ... ८२९
- ४२-शिष्टपालका वातेवर भीमसेनका क्रोध और भीष्मजीका उन्हें शान्त करना ... ८३२
- ४३-भीष्मजीके द्वारा शिष्टपालके जन्मके वृत्तान्तका वर्णन ८३३
- ४४-भीष्मकी बातोंसे चिढ़े हुए शिष्टपालका उन्हें फटकारना तथा भीष्मका श्रीकृष्णसे युद्ध करनेके लिये समस्त राजाओंको चुनौती देना ... ८३५
- ४५-श्रीकृष्णके द्वारा शिष्टपालका वध; राजसूययज्ञकी समाप्ति तथा सभी ब्राह्मणों, राजाओं और श्रीकृष्णका स्वदेश-गमन ... ८३८

## ( द्रुपदपर्व )

- ४६-व्यासजीकी भविष्यवाणीसे युधिष्ठिरकी चिन्ता और समत्वपूर्ण बर्ताव करनेकी प्रतिज्ञा ... ८४५
- ४७-दुर्योधनका यवननिर्मित सभाभवनको देखना और पद्म-पद्मपर भ्रमके कारण उपहासका पात्र बनना तथा युधिष्ठिरके वैभवंको देखकर उसका चिन्तित होना ... ८४७

- ४८-पाण्डवोंपर विजय प्राप्त करनेके लिये शकुनि और दुर्योधनकी बातचीत ... ८५०
- ४९-धृतराष्ट्रके पूछनेपर दुर्योधनका अपनी चिन्ता बताना और द्रुपदके लिये धृतराष्ट्रसे अनुरोध करना एवं धृतराष्ट्रका विदुरको इन्द्रप्रस्थ जानेका आदेश ८५२
- ५०-दुर्योधनका धृतराष्ट्रको अपने दुःख और चिन्ताका कारण बताना ... ८५७
- ५१-युधिष्ठिरको भेंटमें मिली हुई वस्तुओंका दुर्योधन-द्वारा वर्णन ... ८५९
- ५२-युधिष्ठिरको भेंटमें मिली हुई वस्तुओंका दुर्योधन-द्वारा वर्णन ... ८६३
- ५३-दुर्योधनद्वारा युधिष्ठिरके अभिषेकका वर्णन ... ८६६
- ५४-धृतराष्ट्रका दुर्योधनको सम्मानना ... ८६८
- ५५-दुर्योधनका धृतराष्ट्रको उपमानना ... ८६९
- ५६-धृतराष्ट्र और दुर्योधनकी बातचीत; द्रुपदकी दाके लिये सभानिर्माण और धृतराष्ट्रका युधिष्ठिरको बुलानेके लिये विदुरको आज्ञा देना ... ८७१
- ५७-विदुर और धृतराष्ट्रकी बातचीत ... ८७६
- ५८-विदुर और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा युधिष्ठिरका हस्तिनापुरमें जाकर सबसे मिलना ... ८७४
- ५९-जूएके अनौचित्यके सम्बन्धमें युधिष्ठिर और शकुनिका संवाद ... ८७८
- ६०-द्रुपदकी दाका आरम्भ ... ८८०
- ६१-जूएमें शकुनिके लक्ष्ये प्रत्येक दाँवपर युधिष्ठिरकी हार ... ८८१
- ६२-धृतराष्ट्रकी विदुरकी चेतावनी ... ८८४
- ६३-विदुरजीके द्वारा जूएका घोर विरोध ... ८८५
- ६४-दुर्योधनका विदुरको फटकारना और विदुरका उसे चेतावनी देना ... ८८६
- ६५-युधिष्ठिरका धन; राज्य; भाइयों तथा द्रौपदी-सहित अपनेको भी हारना ... ८८९
- ६६-विदुरका दुर्योधनको फटकारना ... ८९३
- ६७-प्राप्तिकामीके बुलानेसे न आनेपर दुःशासनका सभा-में द्रौपदीको केश पकड़कर कसीटकर लाना एवं सभासदोंसे द्रौपदीका प्रश्न ... ८९४
- ६८-भीमसेनका क्रोध एवं अर्जुनका उन्हें शांति करना; विकर्णकी धर्मसङ्गत बातका कर्णके द्वारा विरोध; द्रौपदीका चीरहरण एवं भगवान् द्वारा उसकी लज्जा-रक्षा तथा विदुरके द्वारा प्रह्लादकी उदाहरण देकर सभासदोंको विरोधके लिये प्रेरित करना ... ८९९

- ६९-द्रौपदीका चैतावनीयुक्त विलाप एवं भीष्मका वचन ९०६  
 ७०-दुर्योधनके कुल-कपटयुक्त वचन और भीमसेनका  
 रोषपूर्ण उद्गार ... ९०८  
 ७१-कर्ण और दुर्योधनके वचन, भीमसेनकी प्रतिज्ञा:  
 विदुरकी चैतावनी और द्रौपदीको धृतराष्ट्रसे कर-प्राप्ति ९०९  
 ७२-रात्रुओंको मारनेके लिये उद्यत हुए भीमको  
 युधिष्ठिरका शान्त करना ... ९१३  
 ७३-धृतराष्ट्रका युधिष्ठिरको सारा धन छैटाकर एवं  
 समस्त-दुष्काकर इष्ट-प्रसन्न जानेका आदेश देना ९१४  
 ( अनुद्यतपर्व )  
 ७४-दुर्योधनका धृतराष्ट्रसे अर्जुनकी वीरता बतलाकर  
 पुनः द्यूतकीबाजे लिये पाण्डवोंको बुलानेका  
 अनुरोध और उनकी स्वीकृति ... ९१६  
 ७५-गान्धारीकी धृतराष्ट्रकी चैतावनी और धृतराष्ट्रका  
 अस्वीकार करना ... ९२२  
 ७६-सबके मना करनेपर भी धृतराष्ट्रकी आज्ञासे  
 युधिष्ठिरका पुनः जूआ खेलना और हारना ... ९२३  
 ७७-दुःशासनद्वारा पाण्डवोंका उपहास एवं भीम,  
 अर्जुन, नकुल और सहदेवकी शत्रुओंको मारनेके  
 लिये भीषण प्रतिज्ञा ... ९२५  
 ७८-युधिष्ठिरका धृतराष्ट्र आदिसे विदा लेना; विदुरका  
 कुन्तीको अपने यहाँ रखनेका प्रस्ताव और  
 पाण्डवोंको धर्मपूर्वक रहनेका उपदेश देना ... ९२९  
 ७९-द्रौपदीका कुन्तीसे विदा लेना तथा कुन्तीका विलाप  
 एवं नगरके नर-नारियोंका शोकतुर होना ... ९३०  
 ८०-वनगमनके समय पाण्डवोंकी चेष्टा और प्रजाजनों-  
 की शोकतुरताके विषयमें धृतराष्ट्र तथा विदुरका  
 संवाद और शरणागत कौरवोंको द्रोणाचार्यका  
 आश्वासन ... ९३५  
 ८१-धृतराष्ट्रकी चिन्ता और उनका संजयके साथ वार्तालाप ९४०

## चित्र-सूची

### ( तिरंगा )

- १-श्रीकृष्णका मयासुरसे सभानिर्माणके  
 लिये प्रस्ताव ... ६६५  
 २-इन्द्रावनमें श्रीकृष्ण ... ७९७

### ( सादा )

- ३-पाण्डवोंद्वारा देवर्षि नारदका पूजन ... ६७६  
 ४-जरासंधके भवनमें श्रीकृष्ण,  
 भीमसेन और अर्जुन ... ७२६  
 ५-भीमसेन और जरासंधका युद्ध ... ७२६  
 ६-भीष्मका युधिष्ठिरको श्रीकृष्णकी  
 महिमा बताना ... ७७७

- ७-शिशुपालका युद्धके लिये उद्योग ... ७७७  
 ८-भूमिका भगवान्‌को अदितिके कुण्डल देना ... ८०८  
 ९-शिशुपालके बधके लिये भगवान्‌का  
 हाथमें शक ब्रह्मण करना ... ८४०  
 १०-दुर्योधनका खालके ग्रमसे जलमें गिरना ... ८४०  
 ११-द्यूत-क्रांडामें युधिष्ठिरकी पराजय ... ८९२  
 १२-दुःशासनका द्रौपदीके केश पकड़कर खींचना ... ८९२  
 १३-द्रौपदी-चर-हरण ... ९०३  
 १४-गान्धारीका धृतराष्ट्रको समझाना ... ९२२  
 १५-( ४३ हकरंगे लखन चित्र परमेंमें )

### ( सभापर्व सम्पूर्ण )

